संस्कृति IAS

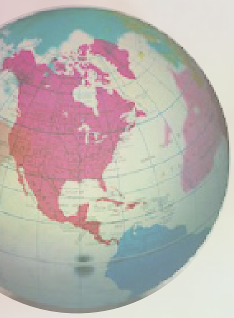

भूगोल

वैकल्पिक विषय

द्वारा – कुमार गौरव

वैकल्पिक विषय के रूप में
क्यों करें भूगोल का चयन?

भूगोल के पाठ्यक्रम में हुए संशोधन
के लिये सही रणनीति

सामान्य अध्ययन
में भूगोल की भूमिका

मुख्य परीक्षा की तैयारी
के लिये सटीक रणनीति

हमारे कक्षा कार्यक्रम
की विशेषताएँ

दृष्टिकोण एवं रणनीति

वैकल्पिक विषय के चयन का आधार

स्नातक या परास्नातक स्तर पर अध्ययन किये गए विषय का वैकल्पिक विषय के रूप में चयन करते समय निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना आवश्यक है–

- क्या विषय का संबंध सामान्य अध्ययन के किसी प्रश्नपत्र के साथ है? (हाँ/नहीं)
- क्या उस विषय को कम समय में कम मेहनत करके तैयार किया जा सकता है? (हाँ/नहीं)
- क्या सिविल सेवा परीक्षा में यह विषय हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों के बीच लोकप्रिय विषयों में से एक है? (हाँ/नहीं)

यदि हाँ, तो आपको निःसंदेह स्नातक/परास्नातक स्तर पर अध्ययन किये गए विषय का चयन करना चाहिये। यदि नहीं, तो ऐसे विषय का चयन करना चाहिये जिसका संबंध सामान्य अध्ययन से हो।

- विषय रुचिकर एवं अंकदायी हो और उसकी प्रकृति अंतर्विषयक (Interdisciplinary) भी हो, क्योंकि यह तालमेल बहुत महत्त्वपूर्ण है।
- विषय में अच्छे मार्गदर्शन के साथ स्तरीय एवं गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री की उपलब्धता को लेकर कोई समस्या न हो।

वैकल्पिक विषय के रूप में 'भूगोल' का चयन क्यों?

- प्रारंभिक परीक्षा के 100 प्रश्नों में प्रतिवर्ष भूगोल एवं पर्यावरण से औसतन 30-35 प्रश्न पूछे जाते हैं।
- मुख्य परीक्षा के स्तर पर प्रथम प्रश्नपत्र के 250 अंकों में कम-से-कम 120-125 अंकों के प्रश्न प्रत्यक्ष रूप से भूगोल से पूछे जाते हैं।
- मुख्य परीक्षा के तृतीय प्रश्नपत्र के 250 अंकों में पर्यावरण, आर्थिक विकास एवं आपदा प्रबंधन से कम-से-कम 100-120 अंकों के प्रश्न पूछे जाते हैं।
- निबंध के प्रश्नपत्र में भौगोलिक एवं पर्यावरणीय मुद्दों पर आधारित एक निबंध अवश्य पूछा जाता है।
- इस प्रकार, वैकल्पिक विषय के रूप में भूगोल की पढ़ाई करने पर मुख्य परीक्षा में वैकल्पिक विषय के 500 अंकों के साथ-साथ सामान्य अध्ययन में 240-250 अंक और निबंध के 250 अंक, यानी कुल 1000 अंकों की तैयारी संभव है।
- भूगोल के पाठ्यक्रम के लगभग 80 प्रतिशत टॉपिक्स का संबंध सामान्य अध्ययन से है। जैसे, सामान्य अध्ययन में भूगोल के अतिरिक्त पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी, आर्थिक एवं सामाजिक विकास, भारतीय समाज (नगरीकरण, जनसंख्या एवं जनांकिकीय मुद्दे), आपदा प्रबंधन आदि टॉपिक्स का विस्तृत अध्ययन वैकल्पिक विषय की तैयारी के दौरान किया जाता है।

> **नोट:** वैकल्पिक विषय के चयन एवं अध्ययन की रणनीति के संबंध में किसी भी प्रकार के संदेह के साथ तैयारी करना असफलता का कारण बन सकता है। इसलिये अपने संदेह को दूर करने के लिये आप निःसंकोच होकर 'कुमार गौरव सर' से मिलें।

- उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त, भूगोल सिविल सेवा परीक्षा के साथ-साथ विभिन्न राज्यों की पी.सी.एस. परीक्षाओं में अभ्यर्थियों द्वारा चुने जाने वाले सर्वाधिक लोकप्रिय विषयों में से एक है। इसकी लोकप्रियता के मूल में उच्च सफलता दर और विषय की वैज्ञानिक प्रकृति है।

सामान्य अध्ययन के टॉपिक्स और उनका भूगोल के साथ संबंध

सामान्य अध्ययन प्रारंभिक परीक्षा पाठ्यक्रम (GENERAL STUDIES PRELIMINARY EXAMINATION SYLLABUS)

नोट: *भूगोल से संबंधित टॉपिक्स को लाल रंग से दर्शाया गया है।*

	टॉपिक		Topic
•	राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व की सामयिक घटनाएँ	•	Current events of national and international importance
•	भारत का इतिहास और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन	•	History of India and Indian National Movement
•	भारत एवं विश्व का भूगोल : भारत एवं विश्व का प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक भूगोल	•	Indian and World Geography - Physical, Social, Economic Geography of India and the World

•	भारतीय राजतंत्र और शासन- संविधान, राजनीतिक प्रणाली, पंचायती राज, लोकनीति, अधिकार संबंधी मुद्दे इत्यादि	•	Indian Polity and Governance - Constitution, Political System, Panchayati Raj, Public Policy, Rights Issues etc.
•	आर्थिक और सामाजिक विकास- सतत् विकास, गरीबी, समावेशन, जनसांख्यिकी, सामाजिक क्षेत्र में की गई पहल आदि	•	Economic and Social Development - Sustainable Development, Poverty, Inclusion, Demographics, Social Sector initiatives etc.
•	पर्यावरणीय पारिस्थितिकी, जैव-विविधता और जलवायु परिवर्तन संबंधी सामान्य मुद्दे, जिनके लिये विषयगत विशेषज्ञता आवश्यक नहीं है	•	General issues on Environmental ecology, Bio-diversity and Climate Change - that do not require subject specialization
•	सामान्य विज्ञान	•	General Science

सामान्य अध्ययन मुख्य परीक्षा पाठ्यक्रम (GENERAL STUDIES MAINS EXAMINATION SYLLABUS)

नोट: *आगे दोनों तालिकाओं में सामान्य अध्ययन (मुख्य परीक्षा) प्रश्नपत्र-1 तथा प्रश्नपत्र-3 में भूगोल से संबंधित टॉपिक्स को लाल रंग से दर्शाया गया है।*

सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-1: भारतीय विरासत और संस्कृति, विश्व का इतिहास एवं भूगोल और समाज		GS Paper 1: Indian Heritage and Culture, History and Geography of the World and Society	
	विषय		**Topic**
•	भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से आधुनिक काल तक के कला के रूप, साहित्य और वास्तुकला के मुख्य पहलू शामिल होंगे।	•	Indian culture will cover the salient aspects of Art Forms, literature and Architecture from ancient to modern times.
•	18वीं सदी के लगभग मध्य से लेकर वर्तमान समय तक का आधुनिक भारतीय इतिहास– महत्त्वपूर्ण घटनाएँ, व्यक्तित्व, विषय।	•	Modern Indian history from about the middle of the eighteenth century until the present – significant events, personalities, issues.
•	स्वतंत्रता संग्राम– इसके विभिन्न चरण और देश के विभिन्न भागों से इसमें अपना योगदान देने वाले महत्त्वपूर्ण व्यक्ति/उनका योगदान।	•	The Freedom Struggle – its various stages and important contributors/contributions from different parts of the country.
•	स्वतंत्रता के पश्चात् देश के अंदर एकीकरण और पुनर्गठन।	•	Post-independence consolidation and reorganization within the country
•	विश्व के इतिहास में 18वीं सदी तथा बाद की घटनाएँ यथा– औद्योगिक क्रांति, विश्वयुद्ध, राष्ट्रीय सीमाओं का पुनःसीमांकन, उपनिवेशवाद, उपनिवेशवाद की समाप्ति, राजनीतिक दर्शनशास्त्र जैसे साम्यवाद, पूंजीवाद, समाजवाद आदि शामिल होंगे, उनके रूप और समाज पर उनका प्रभाव।	•	History of the world will include events from 18th century such as Industrial revolution, world wars, redrawal of national boundaries, colonization, decolonization, political philosophies like communism, capitalism, socialism etc. – their forms and effect on the society.
•	भारतीय समाज की मुख्य विशेषताएँ, भारत की विविधता।	•	Salient features of Indian Society, Diversity of India.
•	महिलाओं की भूमिका और महिला संगठन, जनसंख्या एवं संबद्ध मुद्दे, गरीबी और विकासात्मक विषय, शहरीकरण, उनकी समस्याएँ और उनके रक्षोपाय।	•	Role of women and women's organizations, population and associated issues, poverty and developmental issues, urbanization, their problems and their remedies.
•	भारतीय समाज पर भूमंडलीकरण का प्रभाव।	•	Effects of globalization on Indian society.
•	सामाजिक सशक्तीकरण, संप्रदायवाद, क्षेत्रवाद और धर्मनिरपेक्षता।	•	Social empowerment, Communalism, regionalism & secularism.
•	विश्व के भौतिक भूगोल की मुख्य विशेषताएँ।	•	Salient features of world's physical geography.
•	विश्व भर के मुख्य प्राकृतिक संसाधनों का वितरण (दक्षिण एशिया और भारतीय उपमहाद्वीप को शामिल करते हुए), विश्व (भारत सहित) के विभिन्न भागों में प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र के उद्योगों को स्थापित करने के लिये जिम्मेदार कारक।	•	Distribution of key natural resources across the world (including South Asia and the Indian sub-continent); factors responsible for the location of primary, secondary and tertiary sector industries in various parts of the world (including India).
•	भूकंप, सुनामी, ज्वालामुखीय हलचल, चक्रवात आदि जैसी महत्त्वपूर्ण भू-भौतिकीय घटनाएँ, भौगोलिक विशेषताएँ और उनके स्थान– अति महत्त्वपूर्ण भौगोलिक विशेषताओं (जल-स्रोत और हिमावरण सहित) और वनस्पति एवं प्राणिजगत में परिवर्तन और इस प्रकार के परिवर्तनों के प्रभाव।	•	Important Geophysical phenomena such as earthquakes, Tsunami, Volcanic activity, cyclone etc., Geographical features and their location – changes in critical geographical features (including water-bodies and ice-caps) and in flora and fauna and the effects of such changes.

सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-3: प्रौद्योगिकी, आर्थिक विकास, जैव विविधता, पर्यावरण, सुरक्षा तथा आपदा प्रबंधन		GS Paper 3: Technology, Economic Development, Bio diversity, Environment, Security and Disaster Management	
	विषय		**Topic**
●	भारतीय अर्थव्यवस्था तथा योजना, संसाधनों को जुटाने, प्रगति, विकास तथा रोज़गार से संबंधित विषय।	●	Indian Economy and issues relating to planning, mobilization of resources, growth, development and employment.
●	समावेशी विकास तथा इससे उत्पन्न विषय।	●	Inclusive growth and issues arising from it.
●	सरकारी बजट।	●	Government Budgeting.
●	मुख्य फसलें– देश के विभिन्न भागों में फसलों का पैटर्न, सिंचाई के विभिन्न प्रकार एवं सिंचाई प्रणाली– कृषि उत्पाद का भंडारण, परिवहन तथा विपणन, संबंधित विषय और बाधाएँ; किसानों की सहायता के लिये ई-प्रौद्योगिकी।	●	Major Crops – cropping patterns in various parts of the country, – different types of irrigation and irrigation systems storage, transport and marketing of agricultural produce and issues and related constraints; e-technology in the aid of farmers.
●	प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कृषि सहायता तथा न्यूनतम समर्थन मूल्य से संबंधित विषय; जन वितरण प्रणाली– उद्देश्य, कार्य, सीमाएँ, सुधार; बफर स्टॉक तथा खाद्य सुरक्षा संबंधी विषय; प्रौद्योगिकी मिशन; पशुपालन सम्बंधी अर्थशास्त्र।	●	Issues related to direct and indirect farm subsidies and minimum support prices; Public Distribution System – objectives, functioning, limitations, revamping; issues of buffer stocks and food security; Technology missions; economics of animal-rearing.
●	भारत में खाद्य प्रसंस्करण एवं संबंधित उद्योग– कार्यक्षेत्र एवं महत्त्व, स्थान, ऊपरी और नीचे की अपेक्षाएँ, आपूर्ति शृंखला प्रबंधन।	●	Food processing and related industries in India – scope and significance, location, upstream and downstream requirements, supply chain management.
●	भारत में भूमि सुधार।	●	Land reforms in India.
●	उदारीकरण का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव, औद्योगिक नीति में परिवर्तन तथा औद्योगिक विकास पर इनका प्रभाव।	●	Effects of liberalization on the economy, changes in industrial policy and their effects on industrial growth.
●	बुनियादी ढाँचा– ऊर्जा, बंदरगाह, सड़क, विमानपत्तन, रेलवे आदि।	●	Infrastructure: Energy, Ports, Roads, Airports, Railways etc.
●	निवेश मॉडल।	●	Investment models.
●	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी– विकास एवं अनुप्रयोग और रोज़मर्रा के जीवन पर इसका प्रभाव।	●	Science and Technology – developments and their applications and effects in everyday life.
●	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में भारतीयों की उपलब्धियाँ; देशज रूप से प्रौद्योगिकी का विकास और नई प्रौद्योगिकी का विकास।	●	Achievements of Indians in Science & Technology; indigenization of technology and developing new technology.
●	सूचना प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, कंप्यूटर, रोबोटिक्स, नैनो-टेक्नोलॉजी, बायो-टेक्नोलॉजी और बौद्धिक संपदा अधिकारों से संबंधित विषयों के संबंध में जागरुकता।	●	Awareness in the fields of IT, Space, Computers, robotics, nano-technology, bio-technology and issues relating to intellectual property rights.
●	संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण और क्षरण, पर्यावरण प्रभाव का आकलन।	●	Conservation, environmental pollution and degradation, environmental impact assessment.
●	आपदा और आपदा प्रबंधन।	●	Disaster and disaster management.
●	विकास और फैलते उग्रवाद के बीच संबंध।	●	Linkages between development and spread of extremism.
●	आंतरिक सुरक्षा के लिये चुनौती उत्पन्न करने वाले शासन विरोधी तत्त्वों की भूमिका।	●	Role of external state and non-state actors in creating challenges to internal security.
●	संचार नेटवर्क के माध्यम से आंतरिक सुरक्षा को चुनौती, आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों में मीडिया और सामाजिक नेटवर्किंग साइटों की भूमिका, साइबर सुरक्षा की बुनियादी बातें, धन-शोधन और इसे रोकना।	●	Challenges to internal security through communication networks, role of media and social networking sites in internal security challenges, basics of cyber security; money-laundering and its prevention.
●	सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा चुनौतियाँ एवं उनका प्रबंधन– संगठित अपराध और आतंकवाद के बीच संबंध।	●	Security challenges and their management in border areas – linkages of organized crime with terrorism.
●	विभिन्न सुरक्षा बल और संस्थाएँ तथा उनके अधिदेश।	●	Various Security forces and agencies and their mandate.

सामान्य अध्ययन में भूगोल की भूमिका

सामान्य अध्ययन के पाठ्यक्रम में भूगोल खंड (Topic) के अंतर्गत, प्रारंभिक परीक्षा के स्तर पर 'भारत एवं विश्व का प्राकृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक भूगोल' का तो स्पष्ट उल्लेख है लेकिन पाठ्यक्रम को स्पष्ट नहीं किया गया है। इसी प्रकार, पर्यावरण व पारिस्थितिकी, जैव-विविधता एवं जलवायु परिवर्तन संबंधी खंडों का भी पाठ्यक्रम स्पष्ट नहीं है। अगर प्रारंभिक परीक्षा के पाठ्यक्रम में आर्थिक और सामाजिक विकास, सतत् विकास, गरीबी, समावेशन, जनसांख्यिकी आदि टॉपिक्स की बात करें तो इनका संबंध न सिर्फ अर्थव्यवस्था से है बल्कि पर्यावरण, आर्थिक एवं सामाजिक मुद्दों से भी है। इस प्रकार, प्रारंभिक परीक्षा के स्तर पर सामान्य अध्ययन में भूगोल के प्रत्येक खंड का विस्तृत अध्ययन आवश्यक है।

मुख्य परीक्षा में सामान्य अध्ययन के पाठ्यक्रम में, प्रथम प्रश्नपत्र में भूगोल खंड के अंतर्गत विश्व के भौतिक भूगोल की मुख्य विशेषताएँ, विश्व एवं भारत में मुख्य प्राकृतिक संसाधनों का वितरण, विभिन्न भागों में प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र के उद्योगों को स्थापित करने के लिये उत्तरदायी कारक, भूकंप से संबंधित टॉपिक; द्वितीय प्रश्नपत्र में सामाजिक मुद्दे एवं तृतीय प्रश्नपत्र में पर्यावरणीय तथा आर्थिक मुद्दों के साथ आपदा प्रबंधन से संबंधित टॉपिक्स का विस्तृत अध्ययन करने के लिये पाठ्यक्रम की स्पष्ट जानकारी आवश्यक है।

भूगोल : पाठ्यक्रम विश्लेषण (GEOGRAPHY : SYLLABUS ANALYSIS)

प्रश्नपत्र-I : भूगोल के सिद्धांत *(Paper I : Principles of Geography)*

प्राकृतिक भूगोल *(Physical Geography)*

•	**भूआकृतिक विज्ञान :** भूआकृतिक विकास के नियंत्रक कारक; अंतर्जात एवं बहिर्जात बल; भूपर्पटी का उद्गम एवं विकास; भू-चुंबकत्व के मूल सिद्धांत; पृथ्वी के अंतरंग की प्राकृतिक दशाएँ; भू-अभिनति; महाद्वीपीय विस्थापन; समस्थिति; प्लेट विवर्तनिकी; पर्वत निर्माण के संबंध में अभिनव विचार; ज्वालामुखीयता; भूकंप एवं सुनामी, भू-आकृति चक्र एवं दृश्यभूमि विकास की संकल्पनाएँ; अनाच्छादन कालानुक्रम; जलमार्ग आकृति विज्ञान; अपरदन पृष्ठ; प्रवणता विकास; अनुप्रयुक्त भू-आकृति विज्ञान; भूजल विज्ञान, आर्थिक भूविज्ञान एवं पर्यावरण।	•	**Geomorphology:** Factors controlling landform development; endogenetic and exogenetic forces; Origin and evolution of the earth's crusts; Fundamentals of geomagnetism; Physical conditions of the earth's interior; Geosynclines; Continental drift; Isostasy; Plate tectonics; Recent views on mountain building; Volcanicity; Earthquakes and Tsunamis; Concepts of geomorphic cycles and Land scape development; Denudation chronology; Channel morphology; Erosion surfaces; Slope development; Applied Geomorphology: Geohydrology, economic geology and environment.

भौतिक भूगोल की मुख्य विशेषताएँ (Salient Features of Physical Geography)

- प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा में सामान्य अध्ययन के पाठ्यक्रम की दृष्टि से इस खंड का सर्वाधिक महत्त्व है। भौतिक भूगोल के अंतर्गत भू-आकृति विज्ञान, जलवायु विज्ञान, समुद्र विज्ञान, जैव भूगोल एवं पर्यावरण भूगोल को सम्मिलित किया जाता है।
- चूँकि, सामान्य अध्ययन के पाठ्यक्रम में भौतिक भूगोल की मुख्य विशेषताओं का अध्ययन शामिल है, इसलिये सामान्य अध्ययन के दृष्टिकोण से वैकल्पिक विषय के सैद्धांतिक पक्षों का आलोचनात्मक एवं गहन विश्लेषण करने की आवश्यकता नहीं है।
- जैव भूगोल एवं पर्यावरण भूगोल की समझ के बिना सामान्य अध्ययन के पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तथा मुख्य परीक्षा के तृतीय प्रश्नपत्र के पर्यावरणीय मुद्दों एवं आर्थिक विकास के टॉपिक्स का विश्लेषण संभव नहीं है।

•	**जलवायु विज्ञान :** विश्व के ताप एवं दाब कटिबंध; पृथ्वी का तापीय बजट; वायुमंडल परिसंचरण; वायुमंडल स्थिरता एवं अस्थिरता; भूमंडलीय एवं स्थानीय पवन; मानसून एवं जेट प्रवाह; वायु राशि एवं वाताग्रजनन; शीतोष्ण और उष्णकटिबंधीय चक्रवात, वर्षण के वितरण तथा प्रकार, मौसम और जलवायु; कोपेन, थॉर्नवेट एवं त्रेवार्था का विश्व जलवायु वर्गीकरण; जलीय चक्र; विश्व जलवायु परिवर्तन एवं जलवायु परिवर्तन में मानव की भूमिका एवं अनुक्रिया; अनुप्रयुक्त जलवायु विज्ञान एवं नगरीय जलवायु।	•	**Climatology:** Temperature and pressure belts of the world; Heat budget of the earth; Atmospheric circulation; Atmospheric stability and instability. Planetary and local winds; Monsoons and jet streams; Air masses and frontogenesis, Temperate and tropical cyclones; Types and distribution of precipitation; Weather and Climate; Koppen's, Thornthwaite's and Trewartha's classification of world climates; Hydrological cycle; Global climatic change and role and response of man in climatic changes, Applied climatology and Urban climate.

•	**समुद्र विज्ञान :** अटलांटिक, हिंद एवं प्रशांत महासागरों की तलीय स्थलाकृति; महासागरों का ताप एवं लवणता; ऊष्मा एवं लवण बजट, महासागरीय निक्षेप; तरंग, धाराएँ एवं ज्वार-भाटा; समुद्री संसाधन; जीवीय, खनिज एवं ऊर्जा संसाधन; प्रवाल भित्तियाँ, प्रवाल विरंजन; समुद्र तल परिवर्तन; समुद्री नियम एवं समुद्री प्रदूषण।	•	**Oceanography:** Bottom topography of the Atlantic, Indian and Pacific Oceans; Temperature and salinity of the oceans; Heat and salt budgets, Ocean deposits; Waves, current and tides; Marine resources; biotic, mineral and energy resources; Coral reefs, coral bleaching; Sea-level changes; Law of the sea and marine pollution.
•	**जीव भूगोल :** मृदाओं की उत्पत्ति; मृदाओं का वर्गीकरण एवं वितरण; मृदा परिच्छेदिका; मृदा अपरदन; न्यूनीकरण एवं संरक्षण; पादप एवं जंतुओं के वैश्विक विरण को प्रभावित करने वाले कारक; वन अपरोपण की समस्याएँ एवं संरक्षण के उपाय; सामाजिक वानिकी; कृषि वानिकी; वन्य जीवन; प्रमुख जीन पूल केंद्र।	•	**Biogeography:** Genesis of soils; Classification and distribution of soils; Soil profile; Soil erosion, Degradation and conservation; Factors influencing world distribution of plants and animals; Problems of deforestation and conservation measures; Social forestry; agro-forestry; Wild life; Major gene pool centres.
•	**पर्यावरणीय भूगोल :** पारिस्थितिकी के सिद्धांत; मानव पारिस्थितिक अनुकूलन; पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण पर मानव का प्रभाव; वैश्विक एवं क्षेत्रीय पारिस्थितिकी परिवर्तन एवं असंतुलन; पारितंत्र, उनका प्रबंधन एवं संरक्षण; पर्यावरणीय निम्नीकरण, प्रबंध एवं संरक्षण; जैव-विविधता एवं संपोषणीय विकास; पर्यावरणीय नीति, पर्यावरणीय जोखिम और उपचारी उपाय, पर्यावरणीय शिक्षा एवं विधान।	•	**Environmental Geography:** Principle of ecology; Human ecological adaptations; Influence of man on ecology and environment; Global and regional ecological changes and imbalances; Ecosystem their management and conservation; Environmental degradation, management and conservation; Biodiversity and sustainable development; Environmental policy; Environmental hazards and remedial measures; Environmental education and legislation.

मानव भूगोल *(Human Geography)*

मानव भूगोल में संदर्श (Perspectives in Human Geography)

सही मायने में वैकल्पिक विषय के रूप में भूगोल का अध्ययन 'मानव भूगोल में संदर्श' टॉपिक से आरंभ करना चाहिये, क्योंकि इसके अंतर्गत भूगोलवेत्ताओं द्वारा दिये गए विचारों की सहायता से विषय की सही प्रकृति का ज्ञान होगा। यह भौगोलिक दृष्टिकोण से पाठ्यक्रम के विश्लेषण के लिये भी आवश्यक है।

वैकल्पिक विषय के इस खंड में, मानव भूगोल में संदर्श, मॉडल सिद्धांत एवं नियम तथा प्रादेशिक आयोजन का संबंध सामान्य अध्ययन से नहीं है, जबकि अन्य टॉपिक्स सामान्य अध्ययन के लिये न केवल भूगोल बल्कि भारतीय समाज और आर्थिक एवं सामाजिक विकास की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हैं।

•	**मानव भूगोल में संदर्श :** क्षेत्रीय विभेदन; प्रादेशिक संश्लेषण; द्विभाजन एवं द्वैतवाद; पर्यावरणवाद; मात्रात्मक क्रांति एवं अवस्थिति विश्लेषण; उग्र सुधार, व्यावहारिक, मानवीय एवं कल्याण उपागम; भाषाएँ, धर्म एवं धर्मनिरपेक्षता; विश्व के सांस्कृतिक प्रदेश; मानव विकास सूचकांक।	•	**Perspectives in Human Geography:** Areal differentiation; Regional synthesis; Dichotomy and dualism; Environmentalism; Quantitative revolution and locational analysis; Radical, behavioural, human and welfare approaches; Languages, religions and secularisation; Cultural regions of the world; Human development index.
•	**आर्थिक भूगोल :** विश्व आर्थिक विकास : माप एवं समस्याएँ; विश्व संसाधन एवं उनका वितरण; ऊर्जा संकट; संवृद्धि की सीमाएँ; विश्व कृषि : कृषि प्रदेशों की प्रारूपता; कृषि निवेश एवं उत्पादकता; खाद्य एवं पोषण समस्याएँ; खाद्य सुरक्षा; दुर्भिक्ष : कारण, प्रभाव एवं उपचार; विश्व उद्योग, अवस्थानिक प्रतिरूप एवं समस्याएँ; विश्व व्यापार के प्रतिमान।	•	**Economic Geography:** World economic development: measurement and problems; Wrold resources and their distribution; Energy crisis; the limits to growth; World agriculture: typology of agricultural regions; Agricultural inputs and productivity; Food and nutrition problems; Food security; famine: causes, effects and remedies; World industries: locational patterns and problems; Patterns of world trades.
•	**जनसंख्या एवं बस्ती भूगोल :** विश्व जनसंख्या की वृद्धि और वितरण; जनसांख्यिकी गुण; प्रवासन के कारण एवं परिणाम; अतिरेक-अल्प एवं अनुकूलतम जनसंख्या की संकल्पनाएँ; जनसंख्या के सिद्धांत; विश्व की जनसंख्या समस्याएँ और नीतियाँ; सामाजिक कल्याण एवं जीवन गुणवत्ता; सामाजिक पूंजी के रूप में जनसंख्या। ग्रामीण बस्तियों के प्रकार एवं प्रतिरूप; ग्रामीण बस्तियों में पर्यावरणीय मुद्दे; नगरीय बस्तियों का पदानुक्रम; नगरीय आकारिकी : प्रमुख शहर एवं श्रेणी आकार प्रणाली की संकल्पना; नगरों का प्रकार्यात्मक वर्गीकरण; नगरीय प्रभाव क्षेत्र; ग्राम-नगर उपांत; अनुषंगी नगर; नगरीकरण की समस्याएँ एवं समाधान; नगरों का संपोषणीय विकास।	•	**Population and Settlement Geography:** Growth and distribution of world population, Demographic attributes; Causes and consequences of migration; Conceps of over-under-and optimum population; Population theories, world population problems and policies, Social well-being and quality of life; Population and social capital. Types and patterns of rural settlements; Environmental issues in rural settlements; Hierarchy of urban settlements; Urban morphology: Concepts of primate city and rank-size rule; Functional classification of towns; Sphere of urban influence; Rural-urban fringe; Satellite town; Problems and remedies of urbanization; Sustainable development of cities.

•	**प्रादेशिक आयोजन :** प्रदेश की संकल्पना; प्रदेशों के प्रकार एवं प्रादेशीकरण की विधियाँ, वृद्धि केंद्र तथा वृद्धि ध्रुव; प्रादेशिक असंतुलन; प्रादेशिक विकास कार्यनीतियाँ; प्रादेशिक आयोजन में पर्यावरणीय मुद्दे; संपोषणीय विकास के लिये आयोजन।	•	**Regional Planning:** Concept of a region; Types of regions and methods of regionalization; Growth centres and growth poles; Regional imbalances; Regional development strategies; Environmental issues in regional planning; Planning for sustainable development
•	**मानव भूगोल में मॉडल, सिद्धांत एवं नियम :** मानव भूगोल में तंत्र विश्लेषण; माल्थस का, मार्क्स का और जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल; क्रिस्टॉलर एवं लॉश का केंद्रीय स्थल सिद्धांत; पेरॉक्स और बॉडीविले; वॉन थूनेन का कृषि अवस्थिति मॉडल; वेबर का औद्योगिक अवस्थिति मॉडल; ओस्तोव का वृद्धि अवस्था मॉडल; अंत:भूमि एवं बहि:भूमि सिद्धांत; अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ एवं सीमांत क्षेत्र के नियम।	•	**Models, Theories and Laws in Human Geography:** System analysis in Human geography; Malthusian, Marxian and demographic transition models; Central Place theories of Christaller and Losch; Perroux and Boudeville; Von Thunen's model of agricultural location; Weber's model of industrial location; Ostov's model of stages of growth. Heart-land and Rimland theories; Laws of international boundaries and frontiers.

प्रश्नपत्र-II : भारत का भूगोल *(Paper II : Geography of India)*

भारत का भूगोल (Geography of India)

- सामान्य अध्ययन के दृष्टिकोण से भारत का भूगोल अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण खंड है, जिसका संबंध प्रारंभिक परीक्षा की अपेक्षा मुख्य परीक्षा के पाठ्यक्रम से अधिक है।
- **भारत : भौतिक विन्यास–** भौतिक भूगोल की मुख्य विशेषताओं का अध्ययन भारत के परिप्रेक्ष्य में करना है। इस टॉपिक की सहायता से ही आपदा प्रबंधन एवं भारत के पर्यावरणीय मुद्दों पर समझ को विकसित किया जा सकता है।

•	**भौतिक विन्यास :** पड़ोसी देशों के साथ भारत का अंतरिक्ष संबंध; संरचना एवं उच्चावच; अपवाह तंत्र एवं जल विभाजक; भू-आकृतिक प्रदेश; भारतीय मानसून एवं वर्षा प्रतिरूप; ऊष्णकटिबंधीय चक्रवात एवं पश्चिमी विक्षोभ की क्रियाविधि; बाढ़ एवं अनावृष्टि; जलवायवीय प्रदेश; प्राकृतिक वनस्पति; मृदा प्रकार एवं उनका वितरण।	•	**Physical Setting:** Space relationship of India with neighbouring countries; Structure and relief; Drainage system and watersheds; Physiographic regions; Mechanism of Indian monsoons and rainfall patterns; Tropical cyclones and western disturbances; Floods and droughts; Climatic regions; Natural vegetation; Soil types and their distributions.
•	**संसाधन :** भूमि, सतह एवं भौमजल, ऊर्जा, खनिज, जीवीय एवं समुद्री संसाधन; वन एवं वन्य जीव संसाधन एवं उनका संरक्षण; ऊर्जा संकट।	•	**Resources:** Land, surface and ground water, energy, minerals, biotic and marine resources; Forest and wild life resources and their conservation; Energy crisis.
•	**कृषि :** अवसंरचना : सिंचाई, बीज, उर्वरक, विद्युत; संस्थागत कारक : जोत, भू-धारण एवं भूमि सुधार; शस्यन प्रतिरूप, कृषि उत्पादकता, कृषि प्रकर्ष, फसल संयोजन, भूमि क्षमता; कृषि एवं सामाजिक वानिकी; हरित क्रांति एवं इसकी सामाजिक, आर्थिक एवं पारिस्थितिक विवक्षा; वर्षाधीन खेती का महत्त्व; पशुधन संसाधन एवं श्वेत क्रांति; जल कृषि, रेशम कीटपालन, मधुमक्खी पालन एवं कुक्कुट पालन; कृषि प्रादेशीकरण; कृषि जलवायवीय क्षेत्र; कृषि पारिस्थितिक प्रदेश।	•	**Agriculture:** Infrastructure: irrigation, seeds, fertilizers, power; Institutional factors: land holdings, land tenure and land reforms; Cropping pattern, agricultural productivity, agricultural intensity, crop combination, land capability; Agro and social forestry; Green revolution and its socio-economic and ecological implications; Significance of dry farming; Livestock resources and white revolution, Aqua-culture, Sericulture and poultry; Agriculture, Agricultural regionalisation; Agro-climatic zones; Agro-ecological regions.
•	**उद्योग :** उद्योगों का विकास; कपास, जूट, वस्त्रोद्योग, लौह एवं इस्पात, एल्युमिनियम, उर्वरक, कागज, रसायन एवं फार्मास्युटिकल ऑटोमोबाइल, कुटीर एवं कृषि आधारित उद्योगों के अवस्थिति कारक; सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों सहित औद्योगिक घराने एवं संकुल; औद्योगिक प्रादेशीकरण; नई औद्योगिक नीतियाँ; बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ एवं उदारीकरण; विशेष आर्थिक क्षेत्र; पारिस्थितिकी-पर्यटन समेत पर्यटन।	•	**Industry:** Evolution of industries; Locational factors of cotton, jute, textile, iron and steel, aluminium, fertiliser, paper, chemical and pharmaceutical, automobile, cottage and agro-based industries; industrial houses and complexes including public sector undertaking; Industrial regionalisation; New industrial policy; Multinationals and liberalization; Special Economic zones; Tourism including ecotourism.
•	**परिवहन, संचार एवं व्यापार :** सड़क, रेलमार्ग, जलमार्ग, हवाई मार्ग एवं पाइपलाइन नेटर्क एवं प्रादेशिक विकास में उनकी पूरक भूमिका; राष्ट्रीय एवं विदेशी व्यापार वाले पत्तनों का बढ़ता महत्त्व; व्यापार संतुलन; व्यापार नीति; निर्यात प्रक्रमण क्षेत्र; संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी में आया विकास और अर्थव्यवस्था तथा समाज पर उनका प्रभाव; भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम।	•	**Transport, Communication and Trade:** Road, railway, waterway, airway and pipeline networks and their complementary roles is regional development; Growing importance of ports on national and foreign trade; Trade balance; Trade Policy; Export processing zones; Developments in communication and information technology and their impacts on economy and society; Indian space programme.

•	**सांस्कृतिक विन्यास :** भारतीय समाज का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य; प्रजातीय, भाषिक एवं नृजातीय विविधताएँ; धार्मिक अल्पसंख्यक; प्रमुख जनजातियाँ, जनजातीय क्षेत्र तथा उनकी समस्याएँ; सांस्कृतिक प्रदेश; जनसंख्या की संवृद्धि, वितरण एवं घनत्व; जनसांख्यिकीय गुण; लिंग अनुपात, आयु संरचना, साक्षरता दर, कार्यबल, निर्भरता अनुपात, आयुकाल; प्रवासन (अंत: प्रादेशिक, प्रदेशांतर तथा अंतर्राष्ट्रीय) एवं इससे जुड़ी समस्याएँ, जनसंख्या समस्याएँ एवं नीतियाँ; स्वास्थ्य सूचक।	•	**Cultural Setting:** Historical Perspective of Indian Society; Racial, linguistic and ethnic diversities; religious minorities; Major tribes, tribal areas and their problems; Cultural regions; Growth, distribution and density of population; Demographic attributes; sex-ratio, age structure, literacy rate, work-force, dependency ratio, longevity; migration (inter-regional, intraregional and international) and associated problems; Population problems and policies; Health indicators.

संसाधन, कृषि, अधिवास भूगोल

भूगोल के द्वितीय प्रश्नपत्र में संसाधन और कृषि दोनों से कम-से-कम एक-एक प्रश्न आता है, इसलिये मुख्य परीक्षा की दृष्टि से यह टॉपिक अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। सामान्य अध्ययन के तृतीय प्रश्नपत्र की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण टॉपिक है। अत: इस टॉपिक को वैकल्पिक विषय के पाठ्यक्रम और सामान्य अध्ययन के साथ अंतर्संबंधित करके तैयार करना आवश्यक है। अधिवास भूगोल के टॉपिक्स प्रथम प्रश्नपत्र में भी हैं। प्रथम प्रश्नपत्र का अध्ययन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, जबकि द्वितीय प्रश्नपत्र का अध्ययन भारत के परिप्रेक्ष्य में किया जाता है। प्रत्येक वर्ष इस खंड से भी दोनों प्रश्नपत्रों में एक-एक प्रश्न अवश्य पूछा जाता है।

•	**बस्ती :** ग्रामीण बस्ती के प्रकार, प्रतिरूप तथा आकारिकी; नगरीय विकास; भारतीय शहरों की आकारिकी; भारतीय शहरों का प्रकार्यात्मक वर्गीकरण; सन्नगर एवं महानगरीय प्रदेश; नगर स्वप्रसार; गंदी बस्ती एवं उससे जुड़ी समस्याएँ; नगर आयोजना; नगरीकरण की समस्याएँ एवं उपचार।	•	**Settlements:** Types, patterns and morphology of rural settlements; Urban developments; Morphology of Indian cities; Functional classification of Indian cities; Conurbations and metropolitan regions; Urban sprawl; Slums and associated problems; Town planning; Problems of urbanisation and remedies.
•	**प्रादेशिक विकास एवं आयोजना :** भारत में प्रादेशिक आयोजना का अनुभव; पंचवर्षीय योजनाएँ; समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम; पंचायती राज एवं विकेंद्रीकृत आयोजना; कमान क्षेत्र विकास; जल विभाजक प्रबंध; पिछड़ा क्षेत्र, मरुस्थल, अनावृष्टि, पहाड़ी, जनजातीय क्षेत्र विकास के लिये आयोजना; बहुस्तरीय योजना; प्रादेशिक योजना एवं द्वीप क्षेत्रों का विकास।	•	**Regional Development and Planning:** Experience of regional planning in India; Five Year Plans; Integrated rural development programmes; Panchayati Raj and decen-tralised planning; Command area development; Watershed management; Planning for backward area, deserts, drought-prone, hill, tribal area development; multi-level planning; Regional planning and development of island territories.

राजनीतिक परिप्रेक्ष्य

वैकल्पिक विषय के पाठ्यक्रम में इसे राजनीतिक भूगोल की बजाय राजनीतिक परिप्रेक्ष्य इसलिये लिखा गया है क्योंकि इसके टॉपिक्स का विश्लेषण राजनीतिक दृष्टिकोण से करना है। इसे तैयार करने के लिये सामान्य अध्ययन (मुख्य परीक्षा) के द्वितीय प्रश्नपत्र में 'भारतीय संविधान एवं शासन व्यवस्था' संबंधी टॉपिक्स को तैयार करने के बाद सिर्फ दो टॉपिक्स– 'भारतीय संघवाद का भौगोलिक आधार' और 'हिंद महासागर की भू-राजनीति' का अध्ययन करने की आवश्यकता पड़ेगी।

•	**राजनीतिक परिप्रेक्ष्य :** भारतीय संघवाद का भौगोलिक आधार; राज्य पुनर्गठन; नए राज्यों का आविर्भाव; प्रादेशिक चेतना एवं अंतर्राज्य मुद्दे; भारत की अंतर्राष्ट्रीय सीमा और संबंधित मुद्दे; सीमापार आतंकवाद; वैश्विक मामलों में भारत की भूमिका; दक्षिण एशिया एवं हिंद महासागर परिमंडल की भू-राजनीति।	•	**Political Aspects:** Geographical basis of Indian federalism; State reorganisation; Emergence of new states; Regional consciousness and inter-state issues; International boundary of India and related issues; Cross-border terrorism; India's role in world affairs; Geopolitics of South Asia and Indian Ocean realm.
•	**समकालीन मुद्दे :** पारिस्थितिक मुद्दे: पर्यावरणीय संकट: भू-स्खलन, भूकंप, सुनामी, बाढ़ एवं अनावृष्टि महामारी; पर्यावरणीय प्रदूषण से संबंधित मुद्दे; भूमि उपयोग के प्रतिरूप में बदलाव; पर्यावरणीय प्रभाव आकलन एवं प्रबंधन के सिद्धांत; जनसंख्या विस्फोट एवं खाद्य सुरक्षा; पर्यावरणीय निम्नीकरण, वनोन्मूलन, मरुस्थलीकरण एवं मृदा अपरदन; कृषि एवं औद्योगिक अशांति की समस्याएँ; आर्थिक विकास में प्रादेशिक असमानताएँ; सम्पोषणीय वृद्धि एवं विकास की संकल्पना; पर्यावरणीय संचेतना; नदियों की सहलग्नता; भूमंडलीकरण एवं भारतीय अर्थव्यवस्था।	•	**Contemporary Issues:** Ecological issues: Environmental hazards: Landslides, earthquakes, Tsunamis, floods and droughts, epidemics; Issues related to environmental pollution; Changes in patterns of land use; Principles of environmental impact assessment and environmental management; Population explosion and food security; Environmental degradation; Deforestation, desertification and soil erosion; Problems of agrarian and industrial unrest; Regional disparities in economic development; Concept of sustainable growth and development, Environmental awareness; Linkages of rivers; Globalisation and Indian economy.

नोट: *उम्मीदवारों के लिये इस प्रश्नपत्र में दिये गए विषयों से संगत एक मानचित्र-आधारित प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य होगा।*

Note: *Candidates will be required to answer one compulsory map question pertinent to subject covered by this paper.*

संसाधन, कृषि, उद्योग, परिवहन, संचार एवं व्यापार

मुख्य परीक्षा में सामान्य अध्ययन के प्रथम प्रश्नपत्र में इसका संबंध आर्थिक भूगोल से है, जबकि तृतीय प्रश्नपत्र में आर्थिक विकास से।

आधारभूत संरचना, प्रादेशिक विकास एवं नियोजन

पर्यावरण, संसाधन, कृषि और अधिवास भूगोल के टॉपिक्स को तैयार करने के बाद परिवहन, व्यापार, संचार, प्रादेशिक विकास और नियोजन संबंधी टॉपिक्स को तैयार करना एक सही रणनीति है। इन टॉपिक्स के अंतर्गत पर्यावरण, आर्थिक एवं सामाजिक विकास से संबंधित रणनीतियों, योजनाओं एवं कार्यक्रमों का अध्ययन किया जाता है। मुख्य परीक्षा की तैयारी के लिये इन टॉपिक्स पर विशेष ध्यान देना होता है। इसके बिना द्वितीय प्रश्नपत्र के किसी भी प्रश्न के उत्तर के निष्कर्ष को लिखना संभव नहीं है। इसलिये, मुख्य परीक्षा की दृष्टि से इसकी अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका है। सामान्य अध्ययन के दृष्टिकोण से भी यह एक महत्त्वपूर्ण टॉपिक है क्योंकि इसका संबंध आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय विकास से संबंधित कार्यक्रमों एवं योजनाओं से है।

सांस्कृतिक विन्यास एवं बस्ती

सामान्य अध्ययन के प्रथम प्रश्नपत्र में इसका संबंध सामाजिक भूगोल और भारतीय समाज से है।

समकालीन मुद्दे

भूगोल के पाठ्यक्रम से संबंधित आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय मुद्दों, जिनका वर्तमान समय में भारत के परिप्रेक्ष्य में अत्यधिक महत्त्व है, को समकालीन मुद्दों में शामिल किया गया है।

भूगोल के पाठ्यक्रम में हुए संशोधन के लिये सही रणनीति

- **मानचित्र पर आधारित अध्ययन का विशेष महत्त्व:** यद्यपि मानचित्र पर आधारित अध्ययन का कोई स्पष्ट पाठ्यक्रम तो नहीं है लेकिन इसी की वजह से भूगोल एक अत्यधिक अंकदायी विषय है। अत: नियमित अभ्यास द्वारा इस टॉपिक पर अपनी मज़बूत पकड़ बनाकर मुख्य परीक्षा में अधिक-से-अधिक अंक अर्जित किये जा सकते हैं। साथ ही, विषय के अन्य टॉपिक्स का मानचित्र के साथ अध्ययन करने से अवस्थितियों के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है। मानचित्र की सहायता से भारत का प्रादेशिक अध्ययन करना एक वैज्ञानिक विधि है। सामान्य अध्ययन के संशोधित पाठ्यक्रम में भारत के प्रादेशिक अध्ययन का महत्त्व भी अधिक हो गया है।
- **सैद्धांतिक एवं तथ्यात्मक पक्षों की अपेक्षा व्यावहारिक एवं समकालीन पक्ष को अधिक महत्त्व:** संशोधित पाठ्यक्रम में भूगोल के लगभग सभी टॉपिक्स में व्यावहारिक पक्ष एवं समकालीन मुद्दों से संबंधित टॉपिक्स को महत्त्व दिया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि अब इस विषय में मानव व पर्यावरण के अंतर्संबंध पर आधारित अध्ययन का सर्वाधिक महत्त्व हो गया है। समकालीन मुद्दों पर आधारित टॉपिक्स को सम्मिलित किये जाने के कारण द्वितीय प्रश्नपत्र, वैकल्पिक विषय के साथ-साथ सामान्य अध्ययन के लिये भी महत्त्वपूर्ण हो गया है। अत: भूगोल के द्वितीय प्रश्नपत्र से संबंधित भौगोलिक, पर्यावरणीय, आर्थिक और सामाजिक मुद्दे सामान्य अध्ययन की तैयारी के दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हो गए हैं।
- **पाठ्यक्रम का अंतर्संबंधित विश्लेषण आवश्यक:** यद्यपि भूगोल का संशोधित पाठ्यक्रम विस्तृत अवश्य नज़र आता है लेकिन वास्तविकता में इस विषय के भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय पक्षों को स्पष्ट करने के लिये इसका विस्तृत वर्गीकरण किया गया है। अत: भूगोल के टॉपिक्स को अंतर्संबंधित करने पर पाठ्यक्रम अत्यंत वैज्ञानिक, सहज एवं छोटा हो जाता है। जैसे- सुनामी टॉपिक को भू-आकृति विज्ञान, पर्यावरण भूगोल और समसामयिक मुद्दों से जोड़ा गया है क्योंकि इसका संबंध भौतिक, पर्यावरणीय, आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तनों से है।
- **प्रथम एवं द्वितीय प्रश्नपत्र के टॉपिक्स का अंतर्संबंध:** पाठ्यक्रम का विश्लेषण करने से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि प्रथम एवं द्वितीय प्रश्नपत्र के टॉपिक्स अंतर्संबंधित हैं। अत: इन दोनों प्रश्नपत्रों के अंतर्संबंधित अध्ययन से ही भौगोलिक संकल्पनाओं की व्यावहारिक एवं सही समझ हो सकती है। यहाँ तक कि विगत वर्षों के प्रश्नपत्रों में पूछे गए प्रश्नों की प्रकृति भी अध्ययन की इस रणनीति को महत्त्वपूर्ण बना देती है।
- **प्रथम प्रश्नपत्र में भौतिक एवं मानव भूगोल के दो खंड, जबकि द्वितीय प्रश्नपत्र में ऐसा कोई खंड नहीं:** पाठ्यक्रम में संशोधन के पूर्व द्वितीय प्रश्नपत्र को दो खंडों में बाँटा गया था, वहीं अब इस प्रश्नपत्र का कोई खंड नहीं है बल्कि इसमें 10 टॉपिक्स हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि भारत के भौगोलिक अध्ययन से संबंधित सभी टॉपिक्स अंतर्संबंधित हैं। वास्तव में द्वितीय प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम में भारत के भौतिक संसाधन, कृषि, औद्योगिक, सांस्कृतिक, अधिवासीय, परिवहन संबंधी, व्यापारिक, राजनीतिक, प्रादेशिक एवं समकालिक अध्ययन को महत्त्व दिया गया है जो भौगोलिक अध्ययन के सभी पक्षों को स्पष्ट भी करता है। इस प्रश्नपत्र की समग्रता के साथ तैयारी के लिये भौगोलिक मुद्दों की समझ विकसित करने के साथ-साथ भारत का प्रादेशिक अध्ययन भी आवश्यक है।

मुख्य परीक्षा की तैयारी के लिये रणनीति

- **मौलिक संकल्पना का विकास आवश्यक:** सर्वप्रथम, प्रत्येक टॉपिक से संबंधित मौलिक संकल्पना की समझ विकसित करना आवश्यक है क्योंकि तथ्यात्मक अध्ययन द्वारा इस विषय के संपूर्ण पाठ्यक्रम को तैयार करना तथा परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना कठिन है।
- **विषय के अंतर्संबंधित अध्ययन के लिये सर्वप्रथम टिप्पणी-लेखन अभ्यास आवश्यक:** मुख्य परीक्षा के पाठ्यक्रम के प्रत्येक टॉपिक के सभी पक्षों पर टिप्पणी तैयार करना आवश्यक है। इससे न सिर्फ भूगोल का विस्तृत पाठ्यक्रम तैयार होगा, बल्कि विषय का अंतर्संबंधित विश्लेषण भी संभव हो सकेगा।
- **पी.सी.एस. मुख्य परीक्षा में दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों की तैयारी के लिये पाठ्यक्रम का साठ प्रतिशत अध्ययन पर्याप्त:** दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों की तैयारी के लिये संपूर्ण पाठ्यक्रम का गहन अध्ययन आवश्यक नहीं है; टिप्पणी लेखन के स्तर तक पाठ्यक्रम की समझ विकसित करने के बाद पाठ्यक्रम का 60 से 70 प्रतिशत अध्ययन भी पर्याप्त है, जिसके अंतर्गत सबसे पहले सीधे एवं वर्णनात्मक प्रश्नों को तैयार करना चाहिये। उसके बाद ही आलोचनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं एक से अधिक टॉपिक पर आधारित प्रश्नों को तैयार करना आसान होगा।
- **संपूर्ण पाठ्यक्रम पर पकड़ बनाने के लिये प्रत्येक टॉपिक का संक्षेपण आवश्यक:** पाठ्यक्रम के सभी महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स पर संक्षेपण (Synopsis) तैयार करने के बाद आवश्यकतानुसार समसामयिक मुद्दों से भी जोड़ने का प्रयास करना चाहिये। इसके लिये अच्छे समाचार-पत्रों; योजना, कुरुक्षेत्र, भूगोल और आप जैसी पत्रिकाओं की सहायता लेनी चाहिये। ऐसा करने से न सिर्फ पाठ्यक्रम से सदैव एक जुड़ाव बना रहेगा, बल्कि उत्तर-लेखन की गुणवत्ता में भी सुधार होता रहेगा।
- **भारत के मानचित्र के अध्ययन हेतु पाठ्यक्रम के साथ अंतर्संबंध स्थापित करना आवश्यक:** भारत के मानचित्र पर आधारित अनिवार्य प्रश्न की तैयारी के लिये पृथक रणनीति बनाने की बजाय द्वितीय प्रश्नपत्र के प्रत्येक टॉपिक का अध्ययन करते समय उससे संबंधित अवस्थितियों को तैयार करना चाहिये। इससे न केवल भारत के मानचित्र की तैयारी होगी बल्कि प्रत्येक टॉपिक के तथ्यात्मक पक्षों पर भी मज़बूत पकड़ बनाना आसान होगा।

कक्षा कार्यक्रम की विशेषताएँ

- 'संस्कृति IAS' में भूगोल के कक्षा कार्यक्रम को संपूर्ण पाठ्यक्रम की प्रकृति और विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्नों के अध्ययन के अनुरूप तैयार किया गया है। कक्षा कार्यक्रम एवं अध्ययन-सामग्री को इस ढंग से तैयार किया गया है कि गैर-भूगोल की अकादमिक पृष्ठभूमि वाला भी कोई विद्यार्थी सहजता से भूगोल की तकनीकी अवधारणाओं को समझ सके।
- चूँकि भूगोल एक वैज्ञानिक प्रकृति वाला विषय है, इसलिये इसकी तैयारी में एक सहजता इस बात की रहती है कि विद्यार्थी को बहुत अधिक स्वविश्लेषण की आवश्यकता नहीं होती है, बल्कि कक्षा में पढ़ाई गई अवधारणाओं को व्यावहारिक रूप से समझकर उत्तर लिखने होते हैं। अवधारणाओं को व्यावहारिक रूप से आम बोलचाल की भाषा में समझाने के लिये मानचित्र, डायग्राम और वीडियो का प्रयोग किया जाता है ताकि गैर-भूगोल की अकादमिक पृष्ठभूमि वाला भी कोई विद्यार्थी आसानी से तकनीकी संकल्पनाओं को समझ सके।
- वैकल्पिक विषय के रूप में भूगोल के पाठ्यक्रम को चार खंडों में विभाजित किया गया है। इनमें से सिर्फ सैद्धांतिक खंड का संबंध सामान्य अध्ययन के साथ नहीं है, शेष तीनों खंड सामान्य अध्ययन के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय प्रश्नपत्र के अंतर्गत शामिल हैं। अत: इन तीनों खंडों का विश्लेषण सामान्य अध्ययन में इनकी उपयोगिता एवं आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए किया गया है।
- वैज्ञानिक प्रकृति का विषय होने की वजह से, एक बार अच्छे से तैयारी करके आप भूगोल में आसानी से अच्छे अंक प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही, ऐसे उम्मीदवार जिन्होंने स्नातक/परास्नातक स्तर पर 'भूगोल' का अध्ययन नहीं किया है, वह भी आसानी से इसकी तैयारी कर सकते हैं।

भूगोल के विभिन्न खंडों की कक्षाओं की अनुमानित संख्या

- भौतिक भूगोल – 45 कक्षाएँ
- भारत का क्षेत्रीय अध्ययन – 25 कक्षाएँ
- टैस्ट एवं डिस्कशन – महीने में दो बार
- भूगोल के सैद्धांतिक पक्ष – 25 कक्षाएँ
- भौगोलिक मुद्दों पर आधारित अध्ययन – 45 कक्षाएँ

अध्यापक परिचय

श्री कुमार गौरव

विगत दो दशकों से सिविल सेवा अभ्यर्थियों का मार्गदर्शन कर रहे **श्री कुमार गौरव** आज वैकल्पिक विषय भूगोल के साथ-साथ सामान्य अध्ययन में भारत एवं विश्व के भूगोल, पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी और आपदा प्रबंधन खंडों के अध्यापन के लिये विद्यार्थियों की पहली पसंद हैं।

श्री कुमार गौरव की अकादमिक पृष्ठभूमि भूगोल और विज्ञान की रही है। भूगोल जैसे जटिल एवं तकनीकी अवधारणाओं वाले विषय को आम जीवन की सामान्य घटनाओं के साथ जोड़कर पढ़ाने और विषयवस्तु को पूर्णतः अद्यतन बनाए रखने के चलते श्री कुमार गौरव आज सिविल सेवा अभ्यर्थियों के बीच भूगोल के लिये सर्वाधिक लोकप्रिय एवं भरोसेमंद शिक्षक हैं।

श्री कुमार गौरव ने सिविल सेवा परीक्षा के लिये अपने अध्यापन जीवन की शुरुआत अंग्रेज़ी माध्यम के अभ्यर्थियों के अध्यापन से की थी। इस दौरान एक छोटी समयावधि में ही वह **भूगोल** वैकल्पिक विषय और सामान्य अध्ययन में भूगोल खंड के लिये एक लोकप्रिय एवं भरोसेमंद शिक्षक बन गए। अंग्रेज़ी माध्यम में सिविल सेवा अभ्यर्थियों के बीच बढ़ती लोकप्रियता के चलते हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों के बीच उनकी मांग बढ़ने लगी, फलस्वरूप उन्होंने अंग्रेज़ी माध्यम के साथ-साथ हिंदी माध्यम से सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों का मार्गदर्शन शुरू कर दिया। कुछ ही वर्षों में वह हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों के बीच भूगोल के अध्यापन के पर्याय बन गए। अगले एक-दो वर्षों में हिंदी माध्यम में अध्यापन कार्य की गहन संलग्नता के चलते उनके लिये दोनों माध्यमों के अध्यापन पर एकसमान ध्यान देना कठिन हो रहा था। अतः उन्होंने अपना पूरा समय हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों के मार्गदर्शन को समर्पित कर दिया।

सिविल सेवा परीक्षार्थियों के बीच अत्यंत विश्वसनीय और लोकप्रिय होने की मूल वजह उनकी विशिष्ट अध्यापन शैली है। श्री कुमार गौरव अपने अध्यापन में मानचित्रों, आरेखों के साथ प्रोजेक्टर को काफी महत्त्व देते हैं। इसी कारण भूगोल की जटिलतम अवधारणाएँ विद्यार्थियों को सहजता से समझ आने के साथ-साथ याद हो जाती हैं।

हिंदी माध्यम से सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने में एक बड़ी चुनौती गुणवत्तापूर्ण एवं मौलिक अध्ययन-सामग्री की उपलब्धता की रही है। इस समस्या को समझते हुए श्री कुमार गौरव ने वैकल्पिक विषय **भूगोल** और सामान्य अध्ययन के भूगोल खंड के अध्ययन एवं तैयारी हेतु कई स्तरीय पुस्तकें और सार-संग्रह (Gist) तैयार किये हैं।

विगत दो दशकों में श्री कुमार गौरव के मार्गदर्शन में सौ से अधिक उम्मीदवार विभिन्न प्रतिष्ठित सेवाओं पर चयनित होकर देश की सेवा कर रहे हैं।

संस्कृति IAS
The Complete Administrative Culture

अखिल मूर्ति के निर्देशन में

पढ़िये देश की सर्वश्रेष्ठ टीम से!

श्री अखिल मूर्ति
इतिहास
कला एवं संस्कृति

श्री अमित कुमार सिंह
(IGNITED MINDS)
एथिक्स

श्री ए.के. अरुण
भारतीय अर्थव्यवस्था

श्री सीबीपी श्रीवास्तव
(DISCOVERY IAS)
राजव्यवस्था, सामाजिक न्याय
गवर्नेंस, आंतरिक सुरक्षा

श्री कुमार गौरव
भूगोल, पर्यावरण
आपदा प्रबंधन

श्री राजेश मिश्रा
भारतीय राजव्यवस्था
अंतर्राष्ट्रीय संबंध

श्री रीतेश आर जायसवाल
सामान्य विज्ञान
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

श्री विकास रंजन
(TRIUMPH IAS)
सामाजिक मुद्दे

सामान्य अध्ययन
फाउंडेशन कोर्स
(प्रिलिम्स+मेन्स)

सामान्य अध्ययन
फाउंडेशन कोर्स (लाइव बैच)

सामान्य अध्ययन प्रिलिम्स कोर्स के लिये
ऑनलाइन/पेनड्राइव कोर्सेज़ भी उपलब्ध

वैकल्पिक विषय

इतिहास
द्वारा - अखिल मूर्ति पेनड्राइव /मोबाइल ऐप कोर्स

भूगोल
द्वारा - कुमार गौरव पेनड्राइव /मोबाइल ऐप कोर्स

राजनीति विज्ञान
द्वारा - राजेश मिश्रा पेनड्राइव /मोबाइल ऐप कोर्स

9555-124-124
7428085757/58

Website:
sanskritiIAS.com

Follow us on: